Postal Registration No. G/CHD/0107/2012-14 RNI No. CHABIL/2000/3469

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका

दीन बन्धु सर छोटूराम

जाट लहर

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

वर्ष 14 अंक 05 30 मई, 2014 मूल्य 5 रुपये

प्रधान की कलम से

16वीं लोक सभा चुनाव आचार संहिता का हनन, नैतिकता का पतन

डा. महेन्द्र सिंह मलिक

राष्ट्र के १६वें लोकसभा चूनाव के दौरान मतदाताओं द्वारा कई नये रिकार्ड व कीर्तिमान स्थापित किए गए। स्वतंत्र भारत के इतिहास में पहली बार अमेरीकन राष्ट्रपति चुनाव प्रणाली की तर्ज पर देश के प्रधानमंत्री पद का सीधा चुनाव लड़ा गया। भारतीय जनता पार्टी के प्रधान मंत्री पद के उम्मीदवार श्री नरेन्द्र मोदी ने २८२ लोकसभा सीट जीत कर सत्ता दल कांग्रेस पार्टी के किले को मात्र ४४ सीटों पर समेट कर ध्वस्त कर दिया जिसके लिए कांग्रस पार्टी की तरफ से अप्रत्यक्ष व अघोषित प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार श्री राहुल गांधी को ही जिम्मेवार ठहरायया जा सकता है। इन चुनावों में श्री मोदी का व्यक्तित्व एक शानदार राजनीतिज्ञ के तौर पर उभर कर आया है जिसने कांग्रस सहित सभी राजनैतिक दलों को बुरी तरह पराजित कर एक नया इतिहास रचा है और प्रधानमंत्री पद की दावेदारी को लंबे अंतराल के बाद पूर्ण बहुमत की जीत का असली जामा पहनाते हुए एतिहासिक व अप्रत्याशित रिकार्ड कायम किया है। इसलिए राष्ट्र के महामहिम राष्ट्रपति ने उनको एक शानदार समारोह में राष्ट्र के नए प्रधानमंत्री की शपथ दिलाई और नव निर्वाचित प्रधानमंत्री को राष्ट्र के संपूर्ण नागरिकों की ओर से बार-बार बधाई दी गई।

आज विश्व की अध्यात्म राजधानी भारत में राजनीति की परिभाषा ही बदल गई है। नैतिकता के नाम पर लूट-खसोट और निम्न स्तरीय छींटाकशी आम भाषा में परिवर्तित हो गई है। नीची जाति का दूसरों को संबोधन करने वाले खुद को सभ्य मानते हैं और धर्म निर्पेक्षता का चोला ओड़े हुए हैं। कोई किसी को बोटी बोटी काटने का समुदाय को आह्वान करता है तो कोई बदला लेने का वक्त आ गया कह कर उकसाता है क्या यही भारतीय संस्कृति है? क्या यही विश्व भाईचारा है? भगवान कृष्ण ने इसी धरती पर कहा था कि जब-जब धर्म की गलानी होती है, धर्म की रक्षा हेतू मैं अवतार लेता हूं। आज भी उसी गुजरात की पावन धरा से पूरा राष्ट्र 'नमो-नमो' की लहर में है।

धोटालों की सरताज पार्टी की अध्यक्षा स्वंय 'खून के सौदागर को कुर्सी चाहिए' का संबोधन करती हुई भूल जाती हैं कि आप को क्या चाहिए उसी गद्दी मोह में ही तो पूरा परिवार चिल्लम पो मचा रहा है, त्यागपत्र देने का ड्रामा रच रहा है। गोधरा का स्मरण बार-बार किया जाता है और १९८४ को भूल जाते हैं जब स्वर्गीय राजीव गांधी ने कहा था कि जब कोई बड़ा वृक्ष गिरता है तो पृथ्वी हिलती ही है। क्या उसमें मरने वाले इंसान नही थे। कश्मीर में ब्राह्मणों को अपने ही घर से भागने को मजबूर करने वाले धर्म निर्पेक्षता की बात करते हैं तथा उनको मतदान करने वालों को समुद्र में फेंकने की बात हो रही है। ममता बैनर्जी ने श्री मोदी को गधे की संज्ञा दे दी।

दुख होता है कि ऐसे सभ्य समाज की धरोहर को संभालने वाले उसके पैराकार दिशाहीन क्यों हैं? भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद, क्षेत्रवाद, झूठ, फरेब, लूट-खसोट, आपाधापी और नित नए सूरज नए घोटाले उजागर हुए हैं फिर भी वे दूध-धूले हैं, कांग्रेस को छोड़ने वाले रातो-रात भ्रष्टाचार के सरताज बन गए। मानवता के लिए खड़े होने वालों पर तरह-तहर के केस बनवा कर सलाखों के पीछे करवा दिया जिसके लिए उनकी सरकारें दोषी हैं और आए दिन न्यायालयों से डांट खा रहे हैं, नियुक्तियां रद्द भी हुई हैं फिर भी कोई अहसास नहीं, शर्म मुझको मगर आती नहीं।

–शेष पेज 2 पर

Bhai Surender Singh MALIK Memorial All India Essay Writing Competition ON 04-7-2014

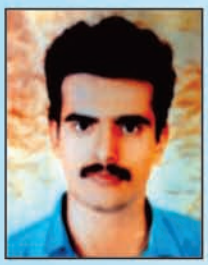

Jat Sabha, Chandigarh has been organising **'Bhai Surender Singh Malik Memorial All India on the Spot Essay Writing Competition'** for the College, University & 10th, 10+1 and 10+2 students every year. This competition is dedicated to the students in the sweet and everlasting memory of late Sh. Surinder Singh Malik, Electronic Engineer, who met with a Fatal car accident in the prime of his life (23 years) on June 5, 1993 and succumbed to the injuries on July 19, 1993. Rani of Jhansi died at the age of 23. Alexender the great died at the age of 23, Florence Nightingale died at the age of 23 and Shefali Chaudhary too died at the age of 23. We are thus reminded of the sad saying "Those whom God loves, die young. During his short of life, he had held high principles and moral values and the award is to envisage his high principles of life. The award will only go to the deserving and meritorious students whose essays are evaluated best by the judges. To keep his memory alive and to develop faith and trust in the younger generation, this competition is being held every year. Inspite of all the odds an effort has been made to show his silver lining in the black clouds to the students so that they develop a belief in themselves by winning the award. The competition is financed by Bhai Surender Singh Malik Institute of Medical Science and Educational Research, Nidani, District Jind Haryana. This prestigious competition carries the prizes for urban and Rural categories. This competition will be held on 04-7-2014.

विस्तृत पृष्ठ 7 पर

'k"k i!t &1

कांग्रेस का एक पुरानी पार्टी का राग अलापने वाले भूल जाते हैं कि 'ऐनी बेसैंट' की कांग्रेस कब की इतिहास के झरोखे में दम तोड़ चुकी है जो अब केवल एक परिवार की लिमिटेड कंपनी है फिर बेशक लिखा लिखाया भाषण पड़ने या लोकसभा द्वारा पारित बिल को फाड़ कर 'यूजलैस' बताकर खुद को सदन से उपर रखने वालों के इमेज निर्माण हेतू जापान की ऐजेंसी को 500 करोड़ रूपये दिए गए। चुनाव आते ही गरीब की याद आई है किसी गरीब के खेत में बैठकर उसके हक हलाल की नसीद दो कौर भी छीन कर खाई गई या किसी झोंपड़ी में सोने का ड्रामा किया गया है लेकिन जो इंसान खुद को संविधान और ससंद से उपर मानता हो भाषण देने के काबिल ना हो वह राष्ट्र को कैसे नेतृत्व दे सकता था। महात्मा गांधी ने जीवन भर एक लंगोटी पर जीवन बसर कर दिया लेकिन आधुनिक गांधी कोई सीख नहीं ले पाए। राजनीति सेवा नहीं व्यवसाय बन चुका है इसमें एक लाख रूपये का व्यापारी पांच वर्षो में 300 करोड़ रूपये घोषित करता है, सज़ा के आकाओं से निजता उसका बाल बांका नहीं कर सकता। मुज़्यमंत्री ज़्लीन चिट का एक ट्रक भर कर दिल्ली रवाना करने को तैयार रहें और श्री अशोक खेमका जैसे ईमानदार अधिकारी कोर्ट कचहरियों में उलझ गए, श्री औमप्रकाश चौटाला सलाखों के पीछे। चुनावों में वाड्रा का जिक्र आते ही उलाहना दिया जा रहा था कि हमें 'जलील' किया जा रहा है ज़्या सच्चाई उजागर करना जलालत है या 'अपने लगी आग, दूसरों के बसंत'। सी बी आई के डंडे से मायावती और मुलायम सिंह यादव का समर्थन बनाए रखा और 10 वर्ष निकाल दिए। इस अवधि में अरबों-खरबों क घोटाले हुए लेकिन जनता की लाठी की आवाज किसी ने ना सुनी।

आज राष्ट्र की राजनीति का अपराधीकरण हो चुका है ज़्योंकि आज साम-दाम-दंडभेद सब कुछ के इस्तेमाल से सज़ा प्राप्त करना ही लक्ष्य है। अपराधिक पृष्ठ भूमि शायद चुनाव जीतने में सहायक हैं। इसके इलावा सोहलवीं लोकसभा में आरोप-प्रत्यारोपों तथा पारस्परिक अभद्र छींटाकशी किए जाने के भी नये रिकार्ड बने हैं और बड़ी संज़्या में जीतने वाले करोड़पति सांसदों का भी एक रिकार्ड बना है। इस चुनाव में निर्वाचित 541 सांसदों में से 442 करोड़पति हैं जबकि 2009 के चुनाव में यह संज़्या 300 थी। इन चुनावों में भारतीय जनता पार्टी के 237, कांग्रेस के 35, ए आई ए डी एम के 29, तृणमूल कांग्रेस के 21 सांसद करोड़पति हैं और टी डी पी पार्टी का एक उज़्मीदवार 683 करोड़ रूपये की संपज़ि का मालिक आंका गया है। इन चुनावों में 186 सदस्य अपराधिक पृष्ठभूमि के हैं जिनमें से 112 सांसदों पर अपराधिक मामले चल रहे हैं जिनमें हत्या, हमला, भाईचारे को दो फाड़ करना, महिला के विरूद्ध अपराध तथा अपहरण जैसे केस दर्ज हैं। चुनाव के दौरान आचार संहिता के उल्घन करने के भी अनगिनत मामले उजागर हुए हैं जिन पर नियंत्रण करने में चुनाव आयोग द्वारा सुझाए गए प्रभावी प्रावधान भी कारगर साबित नहीं हुए। पिछले 10 वर्षो के चुनावी सर्वेक्षण के अनुसार इन लोकसभा चुनावों में सभी राजनैतिक दलों ने अपराधिक पृष्ठभूमि के सर्वाधिक उज़्मीदवारों को चुनाव लड़ाया जिसमें धनबल, अपराध व जीतने की क्षमता के तालमेल को परखा गया है। लोकतंत्र सुधार संघ की एक रिपोर्ट के अनुसार इन चुनावों में चुनाव जीतकर सांसद बनने का सपना देखने वाले औसतन 17 प्रतिशत उज़्मीदवार अपराधिक व दागी पृष्ठभूमि के हैं जबकि पिछले 2009 के चुनावों में यह संज़्या 15 प्रतिशत थी। चुनाव के अंतिम 2 चरणों में 20 प्रतिशत प्रत्याशी किसी न किसी अपराध के कारण कानूनी दांव पेच में फंसे थे। इनमें से 6 प्रतिशत उज़्मीदवार अपराधिक केसों में व 14 प्रतिशत हत्या जैसे गंभीर अपराधिक केसों में संलिप्त पाये गये। इससे स्पष्ट होता है कि एक विकासशील लोकतंत्र में इस प्रकार के धनबल व अपराधिक सांसदों के प्रवेश को रोक पाना नई सरकार के लिए एक गंभीर चुनौती है और आम मतदाता इस सरकार से नई राह की उज़्मीद करता है।

लांछन लगाने मात्र से समस्या का हल नहीं होता उसके समाधान में ही सब कुछ निहित हैं। अपनी ओर से किए गए भूमि घोटाले को दबाने के लिए उद्योग के लिए दिए गए बंजर या रिमोट भू-भाग के आंबटन से अगर क्षेत्र विशेष का विकास हो सकता है, यही विश्वभर में हो रहा है। ऐसे उद्योग लगने से क्षेत्र विशेष की भूमि की कीमत बढ़ जाती है, रोजगार के अवसर भी पैदा होते हैं। जमशेद जी टाटा द्वारा आदिवासी क्षेत्र में उद्योग स्थापित करने से क्षेत्र विशेष की प्रगति के साथ-साथ राष्ट्र को भी एक तोहफा मिला आज वही उद्योग विश्वभर में फैल चुका है ज़्योंकि वह उत्पादकता की धरातल पर है। भूमि घोटाला नहीं जिसमें किसी व्यक्ति विशेष को लाभ हुआ हो। केवल हरियाणा में 'भूमि उपयोग परिवर्तन' के नाम पर 5000 करोड़ रूपये के घोटाले उजागर हो चुके हैं। ऐसी सरकार लोकहितकारी होने का दम कैसे भर सकती है।

इस चुनाव में आंचार सहिता का खुलकर उल्लंघन हुआ है इससे पूर्व भी ऐसी वारदाते हुई हैं लकिन अबकी बारी इसकी पराकाष्ठा हो गई। प्रत्याशियों द्वारा जानबूझकर आचार संहिता का उल्लंघन किया गया। चुनाव आयोग को ललकारा और चुनाव आयोग अज़्सर एक दबू की भूमिका में रहा। चुनाव आयोग का अस्तित्व श्री टी एन शेषन के समय सामने आया जो राजनेताओं को स्वीकार्य ना था इसलिए उसमें भी कुरीतियों का समावेश करवा दिया गया। सज़ाधीशों ने इसे भी अपने लाभ में इस्तेमाल किया लेकिन फिर भी अगर दृढ़ इच्छा शक्ति हो तो बहुत कुछ किया जा सकता है। राजनेताओं द्वारा अपनी कमजोरियां छिपाने तथा श्री नरेद्रं मोदी को सज़ा से दूर रखने हेतू तीसरे मोर्चे की रूप रेखा तैयार करने की योजनाएं बनने लगी और इसकी भनक जनता को भी लग गई। राजनेता भूल गए थे कि 1977 में जनता ने एक डिज़्टेटर को धूल चटा दी थी और राष्ट्र में एक नए सवेंर का उजाला दिखाई दिया था।

वर्ष 2009 में हरियाणा प्रदेश में सज़ारूढ़ दल की शह पर

सतापक्ष के विधायक द्वारा वोटर लिस्ट में लगभग 10 हजार जाली वोट डलवा दी गई जिसका एक राजनैतिक दल द्वारा चुनाव आयोग को शिकायत करने के बावजूद भी कोई कार्यवाही नहीं की गई और लगभग चार साल बाद पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय के निर्देश पर दोषी के खिलाफ एफ आई आर दर्ज की गई। वर्ष 2012 में पंजाब राज्य में हुए विधान सभा चुनावों में भी हिदुंस्तान टाईज़्स द्वारा चुनाव में विभिन्न दलों द्वारा की गई धांधलियों को रोकने व आचार संहिता का पालन करने में चुनाव आयोग की नाकामयाबी पर विस्तार से रिपोर्ट दी गई थी। पश्चिमी उज़र प्रदेश व राष्ट्र के कुछ हिस्सों में अवसरवादी नेताओं द्वारा अपने वोट बैंक व नीहित स्वार्थों के लिए सांप्रदायिक व जातीय हिंसा द्वारा भोली-भाली जनता में द्वेष भावना व पारस्परिक भाईचारा खत्म करने के भरपूर प्रयास किए गए जो कि प्रजातंत्र के नैतिक दिवालिएपन को दर्शाता है लेकिन प्रदेश की जनता ने चुनाव में अपने विवेक का परिचय देकर स्वार्थी नेताओं के मंसूबों को कामयाब नहीं होने दिया जो कि एक स्वस्थ लोकतंत्र के लिए जरूरी है।

अब की बार आशा की जा सकती है कि इतिहासिक भूल का सुधार होगा तथा सबकों साथ लेकर चलने का पथ लिया जाएगा जो आज तक श्री मोदी ने गुजरात में कर दिखाया है। वहां किसी समुदाय विशेष की तुष्टीकरण नीति नहीं अपनाई गई, ना ही किसी को भय दिखाकर मत अपने पक्ष में करने की चेष्टा की गई। केवल विकास, सर्वांगींण विकास का लक्ष्य सामने रखा गया। इसी का परिणाम ही रहा कि 15 वर्षो तक सज़ा उनके हाथ में रही। किसी समुदाय विशेष से भेदभाव नहीं, जन कल्याण योजना सबके लिए लागू हुई।

इस लोकसभा चुनाव में मीडिया की भूमिका भी शक से परे नहीं रही। इतना घिनौना चेहरा कभी किसी ने ना देखा ना सुना। पदमश्री रेवड़ियों की तरह बंट रही थी उन्हे हासिल करने अपने व्यक्तिगत लाभ हेतू या समाचार पत्र अथवा चैनल हेतू आर्थिक लाभ के लिए समसचारों को तोड़ा मरोड़ा या ज़्लैक आउट जैसे घिनौने खेल खेले गए लेकिन जनता हर हथकंडे से वाकिफ रही। कभी मीडिया के लिए उच्च स्थान था आज लोकतंत्र के चारों प्रहरियों में शामिल यह सतंभ पथभ्रष्ट कैसे हो गया। मुंशी प्रेमचंद ने कहा था - ''खीचों ना कमानों को ना तलवार निकालो, जब तोप मुकाबिल हो तो अखबार निकालो। ऐसा शक्तिशाली माध्यम कुंद कैसे हो गया? ज़्या किसी पार्टी विशेष ने इसे भी हाईजैक कर लिया। इस भ्रष्टाचार में सांझीदारी की किरणें कुछेक उजागर हो भी रही हैं। केवल हरियाणा में एक ट्रस्ट बनाकर 300 करोड़ रूपये के विज्ञापन जारी हुए हैं फिर 'मुंह खाए आंख शरमाए'।

आज जनता ने ऐसे धंधो को भी नकार दिया और भारतीय जनता पार्टी को स्पष्ट बहुमत दे दिया जो विस्मित करने वाला तो है लेकिन पंगु नहीं। अब वास्तविक धर्म निरपेक्ष पार्टियां उनके समर्थन को तैयार हैं। सज़ा की गेंद श्री मोदी के पाले में है। अब वे इसे किसी कद्र सोच समझ कर खेल सकते है तथा उन्हें भ्रष्ट तरीकों से सावधान रहते हुए जनता की उज़्मीदों पर खरा उतरना है। आशा की जा सकती है कि वे इसे बखूबी निभाएंगें। उनके नेतृत्व में देश की आंतरिक सुरक्षा सुदृढ़ होगी और राष्ट की बाहरी सीमाओं पर तनाव कम होने के बाद राष्ट्र प्रगति की ओर अग्रसर होगा।

वैसे भी श्री मोदी ने 'होनहार वीरवान के होत चिकने पात' की कहावत को चरितार्थ करने का सराहनीय प्रयास किया है। उन्होने शपथ गृहण समारोह में पाकिस्तान के प्रधानमंत्री नवाज शरीफ सहित सभी पड़ौसी देशों के प्रमुखों को आमंत्रित करके विश्व सद्भावना, शांति तथा पारस्पिरिक भाईचारा बनाने व कायम रज़ने की दिशा में सराहनीय व एतिहासिक प्रयास किया है। राष्ट्र के नवनिर्वाचित प्रधानमंत्री के इस ऐतिहासिक व प्रशंसनीय कदम की समस्त देशवासियों द्वारा सराहना की जा रही है और उन्हे पूर्ण आशा है कि इस नई शुरूआत से विश्व में शांति, सद्भावना व मित्रता कायम रखने में दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र 'भारत' का नाम विश्व के मानचित्र पर मित्र राष्ट्रों की श्रेणी में अग्रिम पंक्ति में आ जाएगा और इससे समस्त विश्व में सद्भावना व शांति का माहौल स्थापित करने में भारत की ओर से एक नये संदेश की शुरूआत होगी।

डा0महेन्द्र सिंह मलिक
आई0पी0एस0 (सेवा निवृत)
पूर्व पुलिस महानिदेशक एवं
राज्य चौकसी ज़्यूरौ प्रमुख, हरियाणा
प्रधान, जाट सभा चंडीगढ़ एवं
अखिल भारतीय शहीद सज़्मान संघर्ष समिति

हमें जिन पर गर्व है।

जाट सभा चण्डीगढ़/पंचकूला के आजिवन सदस्य एवं हरियाणा वन सेवा के सेवानिवृत अधिकारी श्री जय पाल पुनिया के सुपौत्र 'nh Ldkb Ldy* पंचकुला के तृतीय कक्षा के छात्र रनवीर पुनिया ने सितम्बर/अक्तूबर 2013 में नैशनल साईबर ओलम्पियाड द्वारा आयोजित 13 वीं राष्ट्रीय साईबर ओलम्पियाड राज्य प्रतियोगिता में अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर 360 राज्य स्तर पर 14 व शहरी स्तर पर पहला रैंक प्राप्त किया।

श्री रनवीर पुनिया ने जनवरी 2014 में ब्रिटिश कौशल द्वारा आयोजित चौथी अन्तर्राष्ट्रीय इंगलिश ओलम्पियाड में भी भाग लिया जिसमें उन्होंने 182 व शहरी स्तर पर तीसरा स्थान प्राप्त किया। अन्तराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धायें एसिमार्क 14–15 देशों के 1100–1200 शहरों के हजारों स्कूलों में आयोजित की गई।

जाट सभा चण्डीगढ़/पंचकुला रनवीर पुनिया की अल्प आयु में अर्जित की गई इन शानदार उपलब्धियों पर बार–बार हार्दिक बधाई देकर उनके उज्जवल भविष्य की कामना करती हैं।

स्वराज, स्वदेषी, स्वधर्म, स्वभाषा के उद्गाता महर्शि दयानन्द

& MkW- Kku çdk'k fiykfu;k ¼lkln½

महार्षि दयानन्द सरस्वती को अपने श्रद्धा–सुमन अर्पित करते हुए राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने जो कहा उससे राष्ट्रीय जीवन में स्वामी दयानंद का महत्त्व सवतः स्पष्ट हो जाता है। उन्होंने लिखा, ''जनता से संपर्क, सत्य–अहिंसा, जन–जागरण, लोकतंत्र, स्वदेशी प्रचार, हिंदी, गोरक्षा, स्त्री उद्धार, शराबबंदी, ब्रह्मचर्य, पंचायत, सदाचार, देश उत्थान के जिस जिस रचनात्मक क्षेत्रों में मैंने कदम बढ़ाए, वहां दयानन्द के पहले से ही आगे बढ़े कदमों ने मेरा मार्गदशन किया।'' इसलिये डा. पद्मनाभि सीतारमैया ने कहा, ''गाँधी जी राष्ट्रपिता हैं तो दयानन्द राष्ट्रपितामह।'' स्वामी दयानंद का महानिर्वाण 30 अक्टूबर 1883 को दीपावली को, भिनाय–हाऊस अजमेर में हुआ। एक ज्योति, परम ज्योति में विलिन हो गई। स्वामीजी ने ''प्रभो तूने अच्छी लीला की, तेरी इच्छा पूर्ण हो'' ऐसा कहकर योग क्रिया द्वारा प्राण त्याग दिए। जब उनके सत्य प्रचार की सिंह गर्जना के आगे असत्य, अधर्म, झूठ एवं पाखंड के दुर्ग धराशायी होने लगे। भयभीत एवं स्वार्थी लोगों ने षड़यंत्र रचने आरम्भ कर दिए। शस्त्रों के प्रहार हुए फिर भी महामानव सत्य मार्ग पर अग्रसर रहे। स्वामी जी जोधपुर के राजमहलों में प्रचार के लिए गए। वहां, महाराजा जसवंतसिंह को नन्हीं भगतन वेश्या के प्रेम को पाप एवं क्षत्रिया धर्म के विरूद्ध बता कर ललकारा। वेश्या ने षड़यंत्र करके उनके रसोइये जगन्नाथ पंडित से उन्हें विष दिलवा दिया। स्वामीजी ने रसोइये को किराया देकर वहां से भगा दिया वरना लोग उसे मार डालते। अपने हत्यारे को क्षमा–दान, एक जीवनमुक्त परमहंस के बूते की ही बात थी।

भद्रपद शुक्ल 6 विक्रमी सम्वत 1881 तदानुसार गुरूवार 2 सितम्बर 1824 ईस्वी में मोरवी के पास टंकरा नामक ग्राम में करसंन जी लाल जी तिवारी के यहां एक बालक ने जन्म लिया, जिसका नाम मूलशंकर रखा। उनके पिता शंकर के अनन्य भक्त थे। पांचवे वर्ष में पढ़ना आरम्भ कर आठवें वर्ष में यज्ञोपवीत हुआ। पिता ने पुत्र को वेदों का प्रख्यात पंडित बनाने के लिए यजुर्वेद एवं व्याकरण कंठस्थ करा दिए। शिव का अनन्य भक्त बनाने हेतु शिवपुराण तथा शिवरात्रि व्रत का महत्व समझाया गया। सन् 1838 ई. की घटना है कि जब इस बालक की 14 वर्ष की आयु थी, शिवरात्रि को मन्दिर में मूलशंकर देखते हैं कि चूहे अपने बिलों से निकलकर नैवेद्य को कुतर–कुतर खाने लगे और कुछ मूर्ति के ऊपर चढ़कर कूदने लगे। उन्हें भास हुआ, जिससे बोध उत्पन हुआ। उन्होंने निश्चय कर लिया कि अश्वमेव वह कोई और ही शिव है जो इस सारे ब्रह्मांड की रचना, संहार व चालन करता है। इसके उपरान्त उनकी बहन रत्नबा का हैजे से देहांत हो गया। जब वे 16 वर्ष के थे उनके चाचा संसार से प्रस्थान कर गए। वैराग्य के कारण 22 वर्ष की आयु में वे भगवान बुद्ध की भांति गृह त्यागकर सच्चाई की खोज में निकल गए। यह मूलशंकर का महातिभिषक्रमण। 1848 ई. में पूर्णानन्द सरस्वती महाराष्ट्रीय योगी से सन्यास ग्रहण किया तथा दयानन्द सरस्वती कहलाए। ज्ञानर्जन के लिए उन्होंने भिन्न–भिन्न स्थानों में परिभ्रमण किया तथा वेद पाणिनि, निरूक्त, ब्राह्मण, सुत्रदि का ज्ञान अर्जित किया। अन्त में वेद विद्या–अर्जन के लिए भारत के अद्वितीय वेदज्ञ पंडित ढंडी स्वामी श्रीमद विरजानन्द सरस्वती की शरण में 4 नवम्बर 1860 में मथुरा आ गए। उस समय विरजानन्द की अवस्था 81 वर्ष की हो चुकी थी। महात्मा जी दोनों आंखों से अन्धे थे। विरजानन्द जी ने उन्हें 3 वर्ष तक विद्या प्रदान की । इसके उपरान्त उन्होंने स्वामी दयानन्द से सर्वसाधारण के अन्दर वेद प्रचार और अवैदिक मतों के खण्डन की शपथ को गुरू दक्षिणा रूप में ग्रहण किया। इसी के फलस्वरूप उन्होंने वैदिक प्रचार के लिए अपना सारा जीवन समर्पित कर दिया।

स्वामी दयानन्द 1824–1883 का जन्म जिस युग में हुआ था उसे हमारे इतिहास में सांस्कृतिक जागरण काल कहा जाता है। उस समय भारत लगभग हर क्षेत्र में पतन के गहरे गर्त में धँसा पड़ा था। जागरण के अपने आयाम ऐसे हैं जहां सबसे पहले दस्तक उन्होंने ही दी। वे स्वदेशी और स्वराज के प्रथम उद्गाता थे। उस युग में विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग और स्वराज्य की बात करने वाले भी वे सर्वप्रथम और एकमात्र महापुरूष हैं। जब राजा राम मोहनराय भारत में ब्रिटिश शासन के लिए परमात्मा को धन्यवाद देकर उसके शताब्दियों तक बने रहने की प्रार्थना कर चुके थे, जब आर्चाय केशवचन्द्र सेन ने ब्रिटिश शासन की मुक्तकंठ से प्रशंसा और चिरजीवी होने तक की कामना कर डाली, तब दयानन्द एकमात्र ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने कहा, ''कोई कितना भी करे, परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है वही सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मतमतांतर के अग्रहरहित, अपने ओर पराये का पक्षपातशून्य, प्रजा पर माता–पिता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ भी विदेशियों का राज्य कभी भी पूर्ण सुखदायी नहीं होता।''

10 अप्रैल 1875 को गिरगांव मुहल्ले में डॉ. माणिक जी की वाटिका बम्बई में सांय काल साढ़े पांच बजे सभा आयोजित कर आर्य समाज की स्थापना की। स्वामी दयानन्द वैदिक धर्म के प्रचार के प्रति समर्पित थे। उन्होंने कहा था– ''भाई, हमारा कोई स्वतंत्र मत नहीं। मैं तो वेद के अधीन हूँ और हमारे भारत में पच्चीस कोटि आर्य हैं। कई–कई बात में किसी–किसी में कुछ–कुछ भेद हे। जो विचार करने से आप ही छूट जायेगा। मैं सन्यासी हूँ और मेरा कर्त्तव्य यही है कि जो आप लोग का अन्न खाता है इसके बदले जो सत्य समझता हूँ उसका निर्भयता से उपदेश करता रहूँ''। उन्होंने धर्मग्रन्थ वेद का उद्धार किया जो अज्ञान–भरे भाष्यों से विकृत हो चुका था। स्वामी दयानन्द चाहते थे कि धर्म के नाम पर बने ये संकीर्ण दायरे समाप्त हो ओर सारी मानव जाति एक परिवार के समान परस्पर एक–दूसरे के सहायक बनकर अपने जीवन के लक्ष्य तक पहुँचे। इस दिशा में ऋषि दयानन्द ने जो प्रयत्न किया वह अद्भुत था। दयानन्द क्रान्ति के वेग से आए और उन्होंने निष्कपट भाव से घोषित कर दिया कि हिन्दू–धर्म–ग्रन्थों में केवल वेद ही सत्य है। और सत्य का प्रचार करने के लिए स्वामी जी ने सारे देश का भ्रमण आरम्भ किया तथा वेदों का डंका बजा दिया।

स्वामी दयानन्द की मातृभाषा गुजराती थी, पर अध्ययन एवं व्यावहार की भाषा संस्कृत रही। अतः प्रारंभ में वे भाषण संस्कृत

में ही देते थे। उस युग में हिंदी के अखिल भारतीय महत्व की ओर सबसे पहले ध्यान बंगाल के मनीषियों का गया था। स्वामी दयानंद को भी हिंदी अपनाने की प्रेरणा वहीं से केशवचंद्र सेन द्वारा मिली। पर इसके बाद वे गुजरात, महाराष्ट्र, पंजाब आदि जहां भी गए, उनके संवाद और भाषण की भाषा हिंदी ही रही और उन्होंने सारा साहित्य हिंदी में ही लिखा। उन्होंने उसे आर्यभाषा नाम दिया। उन्होंने सत्यार्थप्रकाश जैसे गंभीर विषालकाय ग्रंथ की रचना हिंदी में की। दीनबंधु सी ऍफ एंड्रयूज ने इस ग्रंथ के बारे में कहा था, मैंने भारत आकर सच्चे हिंदू धर्म का परिचय सत्यार्थ प्रकाश के स्वाध्याय से पाया है क्योंकि धर्म से भटकने वालों के लिए यह एक पथप्रदर्शक है। स्वामी जी का उद्देश्य सभी मनुष्यों को उस दिशा में ले जाना था जिसे वे सत्य की दिशा समझते थे। उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है जो–जो सब बातों में सत्य बातें हैं, वे सबमें अवरूद्ध होने से उनका स्वीकार करके जो–जो मत–मतान्तरों में मिथ्या बातें हैं उनका खण्डन किया है।

अन्य समाज सुधारकों के कार्यक्रम जहां कतिपय सामाजिक कुरीतियों तक सीमित थे, वहां दयानंद अकेले ऐसे महापुरूष थे जिनके कार्यक्रम में राजनीति, अर्थनीति, शिक्षा जैसे विषय भी शामिल थे। अपने प्रसिद्ध ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश में उन्होंने पूरे–पूरे अध्याय इन विषयों पर लिखे हैं। समाज में व्याप्त अंधविश्वासों एवं कुरीतियों का उन्होंने घोर विरोध किया फिर चाहे वह बाल विवाह, अनमेल, विवाह, पर्दा प्रथा, सती प्रथा, स्त्री शिक्षा–निषेध आदि हो, मृतक भोज/श्राद्ध, मूर्तिपूजा, वृक्ष पूजा हो, नामस्मरण/गंगास्त्रान आदि से पापमुक्ति की बात हो, या जन्म से जाति प्रथा मानने की बात हो जिसकी सबसे निकृष्ट परिणति हुई है दलितों के साथ भेदभाव पूर्ण छुआछूत के व्यवहार में। उन्होंने प्रमाण देकर स्पष्ट किया कि ये कुरीतियां वेदविरूद्ध हैं, तर्कहीन हैं, हमारे सामाजिक पराभव का कारण हैं। छूआछूत के विचार को अवैदिक बताया तथा सैंकड़ों अन्त्यजों को यज्ञोपवीत देकर हिंदुत्व के भीतर आदर का स्थान दिया। नारियों को सम्मान, विधवा विवाह तथा नारी शिक्षा का उत्थान किया। वर्गाश्राम का आधार गुण कर्म के आधार पर माना, पुरूषार्थ को उन्होंने भाग्य से बड़ा बताया। उन्होंने अनिवार्य और निशुल्क शिक्षा की व्यवस्था आवश्यक बताते हुए लिखा, इसमें राजनियम और जातिनियम होना चाहिए कि पांचवें अथवा आठवें वर्ष से आगे अपने लड़कों और लड़कियों को घर में न रख सकें। पाठशाला में अवश्य भेज देंवे, जो न भेजें वह दंडनीय हों। किंतु दयानंद की हुंकार के बाद भारतीय समाज की अविचल उदासीनता की यह मनोवृत्ति विदा होने लगी।

रोमां रोलां के अनुसार उस समय भारत में पश्चिमीकरण अपनी सीमा से बहुत आगे बढ़ चुका था। इस पश्चिमीकरण के मुख्य साधन थे– अंग्रेजी शिक्षा और ईसाई धर्म (पंथ) का प्रचार। तत्कालीन अन्य सभी महापुरूष अंग्रेजी शिक्षा में दीक्षित थे, ईसाइयत से प्रभावित थे, और समस्याओं का समाधान ईसाइयत के आलोक में ही सुझा रहे थे। भारतीयों में इससे अपने अतीत के प्रति गर्व के स्थान पर शर्म का भाव घर करता जा रहा था। इसके विपरीत स्वामी दयानंद पश्चिमीकरण से सर्वथा अछूते पारंपरिक भारतीयता की देन थे। वे संस्कृत माध्यम से शिक्षित, वेदों, ब्राह्मण ग्रंथों, उपनिषदों, दर्शन शास्त्रों, स्मृतियों, आदि के उभ्दय विद्वान थे, पर कूपमंडूकता और रूढ़िवादिता से कोसों दूर थे। उन्होंने वेदों का गौरव व्याख्यान कर देशवासियों में निराशा, पराजय, पराधीनता, वर्ण व्यवस्था, एवं जन्म के कारण हीनभावना को दूर कर स्वाभिमान को जागृत किया। उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए देवेन्द्र नाथ मुखापाध्याय का कथन है, ये हैं भारत दिवाकर दयानंद, जिन्होंने इस पाप परिपुष्ट युग में जन्म लेकर जीवन भर निष्कण्टक ब्रह्मचर्य का पालन किया, जो विद्या में, वाक्पटुता में, तार्किकता में, शास्त्रदर्शिता में, भारतीय आचार्य मण्डली के बीच में शंकराचार्य के ठीक परवर्ती आसन पर आरूढ़ होने के योग्य थे, वेद निष्टा में, वेद ज्ञान की गंभीरता में, जिनका नाम व्यासादि महर्षिगण के ठीक नीचे लिखे जाने के योग्य था, जो अपने को हिंदुओं के आदर्श सुधारक पद पर प्रतिष्ठत कर गए हैं और इस मृत प्रायः आर्य जाति को जागृत करके उठाने के उद्देष्य से मृत संजीवनी औषध के भाण्ड को हाथ में लेकर जिन्होंने भारत खण्ड में चतुर्दिक परिभ्रमण किया था।

पुष्कर में महाराजा सूरजमल विश्वविद्यालय बने

सूरजभान दहिया

आप जानते है कि जिस देश या जाति को नष्ट करना हो तो उसके इतिहास को नष्ट कर दिया जाये क्योंकि इतिहास में शस्त्र से भी भारी शक्ति होती है, जिससे सूखी हड्डियों में भी रक्त की धारा बहने लगती है। इतिहास हमें बताता है कि हम कौन थे और आज क्या हो गये है। हम अपने पूर्वजों के गौरवशाली इतिहास से प्रेरणा ग्रहण करे, साथ में उनके महान कार्यों पर गर्व का अनुभव करें। यही इतिहास हमें सीखाता है। किसी विद्वान ने ठीक ही कहा है कि किसी जाति अथवा देश का धन छीन जाना इतना हानिकारक नहीं होता, जितना कि उसके इतिहास का नष्ट हो जाना।

हमारे लिये बड़े दुःख की बात है कि जाट कौम का इतिहास इतना गरिमामय होने के बावजूद भी इसको संकलित नहीं करवाया गया और अब तक इस कौम के इतिहास पर जितना शोध कार्य होना चाहिये था, उतना नहीं हो पाया है। हमारे विद्याालयों एवं विश्वविद्यालयों में जो इतिहास पढ़ाया जाता है, उसमें जाट वीरों के शासन एवं वीरता का विवरण करना तो दूर, इनके नामों तक का उल्लेख नहीं किया जाता है।

आधुनिक भारतीय इतिहास के नक्षत्र महाराजा सूरजमल का बलिदान हुये 250 वर्ष हो गये, पर इस ऐतिहासिक वेला पर भी जाट कौम में क्या वह उत्साह प्रवाहित हो रहा है जिसके महाराजा सूरजमल प्रतिक हैं? न जाने कब से महाराजा सूरजमल बलिदान स्थल पर एक औपचारिकता समारोह का आयोजन किया जाता रहा है। पर वहां पर भी कभी आभास नहीं होता कि किसान की वेशभूषा

में रहकर महाराजासूरजमल धर्म परायणता व उदारता के प्रतिक जन कल्याणकारी लोकप्रिय प्रशासक हुये। वे इतिहास विभूति होते हुये भी कौम की युवापीढ़ी के प्रेरणा स्त्रोत नहीं बन पाये हें। ऐसे ही महान व्यक्ति कौम के इतिहास को गतिमय एंव गौरवमय बनाते हैं। क्या हमारा दायित्व नहीं बनता कि उनके 250 वे बलिदान दिवस पर एक विश्वविद्यालय उनको समर्पित करें जहां युवाशक्ति आधुनिक शिक्षा ग्रहण करके कौम का नया इतिहास लेखन कर सकें।

वेद शास्त्रों के अनुसार शक्तिशाली शुरवीर, क्षेत्रीय एवं उत्साही पुरूष ही देश के शासक बनते हैं। महाराजा सूरजमल में ये सभी गुण विद्यामन थे, इसलिये वे किसान राजा बने। आज भारत में एक वातावरण कर दिया गया है कि भारत के प्रधानमंत्री केवल दो ही हो सकते हैं और हम चुपचाप इस बात को बिना–सोचे विचारे सहमति भी देते जा रहे हैं। असली भारत गांवों में बसता है और देश की अधिकांश जनता कृषि से जुड़ी हुई है। कृषि तो भारतीय सभ्यता की आत्मा है और आत्मा है तो जीवन है, पर आत्मा तो किसान में निवास करती है। जब देश की एकता और अखण्डता तथा संस्कृति को नष्ट करने पर बाहरी शक्तियां तुली हुई थी तो महाराजा किसानमयी सूरजमल ने साहस किया और कौम का स्वाभिमान रखा तथा भरतपुर नगर को आबाद किया वहां एक सुदृढ़ साम्राज्य की स्थापना की। कृषि विकास करके उन्होंने भरतपुर को चिन्हों गऊ एवं शेर को यर्थाथवादी बना दिया अर्थात उन्होंने भावी भारत के लिये जय किसान जय जवान के संस्कारों को जन्मा। जाट कौम आज कयों महाराजा सूरजमल द्वारा दिये संस्कारों को भूला बैठी है। क्यों नहीं हम कृषि प्रधान गणतन्त्र भारत में एक किसान प्रधानमंत्री बनाने का संकल्प लेते? जाट कौम को इसके लिये तैयार होना पड़ेगा और सर्वत्र भारत में जय जवान जय किसान का उद्धोष करना होगा।

देश में जब जय जवान जय किसान का उद्धेष हुआ है किसान राज्य की सदैव स्थापना हुई है। महाराजा सूरजमल के संस्कारों पर चलने वालो वल्लभगढ़ नरेश नाहरसिंह ने कृषिक धर्म निरपेक्ष बल्लभगढ़ राज्य परिभाषित किया। उन्होंने किसानो के पवित्र पर्व बसन्त पंचमी के दिन ही राज्यशासक के रूप में शपथ ली। यही नहीं जब देश की स्वतन्त्रता का प्रश्न उठा तो भरतपुर महाराजा सूरजमल की भांति वीरता का परिचय दिया तथा वे बंसन्ती हो गये। इसी परम्परा को निभाया चौ॰ छोटूराम ने जब उन्होंने अपनी बुद्धिमता से बृहद पंजाब में जमीदारी पार्टी गठीत करके कृषक राज्य स्थापित किया। उन्होंने तो किसानों को विश्वास दिला दिया था कि पंचमी समारोह आयोजित करने का मेरा तात्पर्या यही है कि स्वतंत्र भारत का प्रशासक केवल किसान हो क्योंकी गणतन्त्र व्यवस्था में गठित प्रधान होता है और भारत की 80 फीसदी जनता खेती से जुड़ी है अतएवं किसान भारत का प्रमुख बने यह किसानो का न्यायोचित हक है। अति खेद की बात है कि वे आजादी से कुछ साल पहले ही परलोक सिधार गये। उनकी अकस्मात् मृत्यु किसानों को अहसास करा गयी और आज भी लोकतन्त्र भारत में 60 प्रतिशत जनता कृषि से जुड़ी होने के बावजूद भी अपना प्रधानमंत्री चुनने में असमर्थ हो रही है। इतिहास का अध्ययन करें तो आप जानेगें कि महाराज सूरजमल, बल्लभगढ़ नरेश तथा दीनबंधु छोटूराम धर्मनिरपेक्ष, असली भारत पथप्रदर्शक एवं कुशल प्रशासक थे तथा उन्होंने ज्ञान से भारत की राजनीति को सही दिशा प्रदान की।

आज भारत की राजनीति दिशाभमित, धर्मउन्माद से प्रभावित तथा स्वार्थसिद्धी की परिचायक बन बैठी है तथा ईमानदार, परिश्रमी नैतिक और देश भक्त किसान इस घृणित राजनीति का शिकार हो गया है। किसान का आज कोई सच्चा हिमायती नहीं है और सभी राजनीतिक दल किसानों की उपेक्षा कर रहें हैं। इसी संकट की स्थिति में किसान की वेशभूषा में पुनः महाराजा सूरजमल तुल्य शक्ति की आवश्यकता है। ज्वलंत प्रश्न यही है कि ऐसी दिव्यशक्ति असहाय किसान को कैसे प्राप्त हो।

हमें समझ लेना चाहिये कि विकट परिस्थितियों से निपटने के लिये नेतृत्व सदैव जनसाधरण से उभरता है। जनसाधारण से जिस व्यक्तित्व ने शोषण, उपेक्षा, अधिकार हनन एवं अत्याचार का अनुभव किया है एवं अपने जीवन को समुदाय हेतु समर्पण किया है, उसने सुदृढ़ नेतृत्व दिया है। महाराजा सूरजमल, राजानाहर सिंह एवं चौ॰ छोटूराम इस श्रृंखला के आदश नेतृम्व है। इनके पश्चात् जाट कौम से प्रभावी नेतृत्व नहीं उभरा। यदि भगत सिंह युवाशक्ति जाट कौम को कुछ और समय तक और प्रेरणा देती रहती तो जाट कौम आज अधेंपन की स्थिति में न होती।

नेतृत्व सदैव एक विचारधारा को लेकर आगे बड़ता है और विचारधारा ज्ञान से उपजती है। आज हमारी युवाशक्ति में ज्ञान प्रवाह संचार नहीं है–वह ज्ञान जो कौम की बुनियाद को समझे। निःसदेंह हमारे युवक अच्छे इन्जीनियर हैं, डॉक्टर हैं, प्रशासक हैं तथा अन्यसेवाओं में भी हैं। परन्तु मैं यदि दूर दूर तक इतिहास के पन्नों को पलटूं तो मुझे कोई जाट समुदाय में साहित्यकार, इतिहासविद, दार्शिनिक, लेखक एवं समाजिक विशलेषक नहीं मिलता। हम इन क्षेत्रों में क्यों पिछड़ गये हैं, इसका एक ही कारण है हमने कभी भी अपना ज्ञान केन्द्र नहीं बनाया। आज के युग में ज्ञान बल सबसे प्रभावी शस्त्र है जो विश्वविद्यालय में बनाया जाता है। जब मैंने जाट समुदाय के सम्मुख जाट लेंड को परिभाषित किया तो मेरा तात्पर्य क्रांतिकारी नेतृत्व इस लैडं से अवतरित होने की कामना की थी। दशक बीत गये फिर भी जाट कौम को

समझ नहीं आया कि हमें साहित्याकारों, दार्शनिकों, राजनीतिज्ञों, लेखकों एवं चितको की आवश्यकता है जो कौम को आज की सदी के साथ चलने के लिये प्रेरणा स्त्रोत बने।

राजस्थान हिस्टोरिकल रिसर्च केन्द्र जयपुर खंड–II में उल्लेख है कि महारजा सूरजमल द्वारा 1756 ई॰ में हरिदेव जी का मन्दिर भरतपुर में बनवाया था। राजकीय पन्नों की मुहर में 'श्री हरिदेव सी सहाय' अंक प्रतिपादित था और यह मान्य मुहर थी। अतएवं भरतपुर एक आदर्श एवं हिन्दु संस्कृति पर आधारित राज्य था। महाराजा सूरजमल की धमनीयों में पैतृक देने से क्रमशः गोकुल देव से बरनसिंह तक का अदम्य स्वाभिमानी रक्त संचार कर रहा था। उन्हें आत्मविश्वास, स्वाधीनता, धर्म ध्रुवता, उदारता, प्रजावात्सलय, सौहार्द, सांकल्पिक दृढ़ता और सजगता के गुण इन्हीं पूर्वजों से मिले थे जो समय–समय पर समर्णिम सफलता का सुपरिणाम बने।

उत्तरीभारत में अधिकतर भाग उनका राज्य था – यही वही क्षेत्र है जिसे मैं 'जाट हार्ट लैंड' परिभाषित करता हूं। यहां पर महाराजा ने अनेक कल्याणकारी एवं कृषि विकास कार्यक्रम क्रियान्वित किए। इससे यह कृषि विकासित एवं सम्पन राज्य बना। आज इसे हरित क्रान्ति क्षेत्र भी कहा जाता है। फादर वंडेल के अनुसार भरतपुर बहुधायक राज्य था एवं राज्यकोष सदैव भरा रहता था।

पं॰ बलदेव सिंह सूर्य द्विज ने अपने लेखन सग्रांह में उल्लेख किया है कि नादिरशाह के आक्रमण से दिल्ली तथा दक्षिणी भूखंड के नागरिकों ने नरेश सूरजमल राज्य में शरण ली थी। इस विशालजन समुदाय को आबाद करने के लिये यहां पर एक विशाल नगर योजना बनाई थी। अतः महाराजा सूरजमल ने नाागरिक को भरतपुर बसा कर अटबी, बुर्जे तथा पारिख बनाकर पर्याप्त सुविधा प्रदान की थी। प्रो॰कानूनगो के अनुसार भारत में भरतपुर उस समय एक मात्र ऐसा राज्य था जहां पर शांति एवं सुरक्षा का वातावरण था।

भरतपुराधीश महाराजा सूरजमल के अन्तः करण से नमन हुये मैं जाट कौम से पूछना चाहता हूँ कि भरतपुर किला जो हमारी कौम की अमूल्य धरोहर है किस हालात में है? पुष्कर झीलका सूरजमल धाट कौन हथिया ले गया है? प्रश्न पर प्रश्न जुड़ते जा रहे हें। और मेरी बदंना बढ़ती जा रही है। पर एक अनुरोध मैं कर रहा हूँ कि जाट कौम पुष्कर सूरजमल घाट से जलग्रहण करके संकल्प ले कि हम पुष्कर में महाराजा सूरजमल विश्वविद्यालय स्थापित करेंगें। यदि आप ऐसा नहीं करते तो आप पुष्कर मेले में न आया करे। इस विश्वविद्यालय की स्थापना का तात्पर्या यही है कि हम अपने इतिहास को समझें, अपनी संस्कृति का विकास करें और महाराजा सूरजमल के सफल राजनीतिज्ञ चरित्र को आज के सन्दर्भ में अध्ययन करके जाट कौम के वजूद को निखारें।

'k"k ist&1

HkkbZ lqjsUnz flag efyd ;knxkj vku nh LikV vf[ky Hkkjrh; fucU/k ys[ku çfr;ksfxrk & fnukad 04 tqykbZ 2014

जाट सभा चण्डीगढ़ द्वारा दिनांक 04 जुलाई 2014 को सुबह 10 से 11 बजे तक कालेज, युनिवर्सिटी तथा दसवीं, 10+1 व 10+2 क्लास के विद्यार्थियों के लिए भाई सुरेन्द्र सिंह मलिक यादगार आन दी स्पाट अखिल भारतीय निबन्ध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। प्रतियोगिता शहरी व ग्रामीण दो श्रेणियों में निम्नलिखित परीक्षा केन्द्रों पर आयोजित की जायेगी।

1. जाट भवन , 2–बी, सैक्टर 27–ए, चण्डीगढ।
2. चौ. भरत सिंह मेमोरियल स्पोर्ट्स स्कूल, निडानी, जीन्द।
3. भाई सुरेन्द्र सिंह मलिक मैमोरियल गर्ल्स सीनियर सैकेंडरी स्कूल, निडानी, (जीन्द)
4. ज्ञानदीप माडल स्कूल, सेक्टर–18, पंचकूला।
5. Sarthak Govt. Model Sr. Secondary School, Sector-12A, Panchkula
6. गर्वनमेंट गर्ल्ज़ सीनियर सैकेंडरी स्कूल, शामलों कलां, जीद।
7. गर्वनमेंट गर्ल्स सीनियर सैकेंडरी स्कूल, जुलाना, जीन्द
8. Govt. Girls Sr. Secondary School, Lajwana Kalan, Jind
9. Govt. Sr. Secondary School, Gatoli, Jind

इस प्रतियोगिता के लिए प्रतियोगी 10 रुपये शुल्क के साथ किसी भी परीक्षा केन्द्र पर प्रतियोगिता में भाग लेने के लिये आवेदन कर सकता है। प्रतियोगिता के विजेताओं को प्रथम ईनाम 3100 रुपये व गोल्ड पदक, द्वितीय ईनाम 2100 रुपये व कांस्य पदक, तृतीय ईनाम 1500 रुपये व रजत पदक के पुरस्कार प्रदान किये जायेंगे। इसके इलावा 1000 रुपये, 900 रुपये, 700 रुपये व 600–600 रुपये के सांत्वना पुरस्कार दिये जायेंगे। प्रतियोगिता हिन्दी या अंग्रेजी किसी भी भाषा में दी जा सकती है जो कि 1000 शब्दों से ज्यादा नहीं होनी चाहिए।

प्रतियोगी अपने नजदीक के किसी भी परीक्षा केन्द्र में 02 जूलाई 2014 तक आवेदन कर सकता है। निबन्ध का विषय प्रतियोगिता शुरू होने से पहले बताया जायेगा। परीक्षार्थीयों को परीक्षा के लिए केवल अपना पैन तथा कार्डबोर्ड लाना होगा जबकि उत्तर पुस्तिका केन्द्र पर उपलब्ध कराई जायेगी। विजेताओं को पुरस्कार बसन्त पंचमी तथा सर छोटूराम जयन्ती समारोह के अवसर पर प्रदान किये जायेंगे। इस प्रतियोगिता का सारा खर्च भाई सुरेन्द्र सिंह मैडिकल एजुकेशन तथा अनुसंधान निडानी (जीन्द) द्वारा वहन किया जायेगा।

ऐश की भूख रोटियों से नहीं जाती, उसके लिये दुनिया के अच्छे से अच्छे पदार्थ चाहिये। – प्रेमचन्द

जाट समाज के गुण व अवगुण

jkd'k ljkgk

भारतीय जाट सामज में बहुत सी विशेषतायें है। जाट जाति अपने असधारण कार्यों के कारण भारत में महत्वपूर्ण स्थान रखती है तथा देश की रक्षा करने में इस जाति को असधारण कौशल प्राप्त है। जिसके कारण जाट जाति एक मार्शल कोम का स्थान रखती है परन्तु जाट समाज आज उतना विकास नहीं कर पाया है जितना इस समाज के लोगों को करना चाहिये था। जाट समाज में बहुत सी विशेषताए होने के पश्चात भी कुछ अवगुण ऐसे प्रवेश कर गये है जो जाट समाज के विकास में रूकावटें बने हुए है। इस प्रकार जाट समाज उस तलवार के समान है जिसे सही प्रकार से उपयोग किया जाये तो इस जैसा कोई हथियार नहीं है जिसके प्रयोग से एक श्रेष्ठजीवन व उन्नत समाज की स्थापना की जा सकती है परन्तु यदि इस तलवार को गलत तरीके से प्रयोग किया जाये तो यह आत्मघाति सिद्ध हो सकती है। इस प्रकार जाट समाज में जहां बहुत से गुण है वही कुछ अवगुण भी है। आवश्यकता केवल गुणों के सही प्रबन्धन करने की तथा अवगुणों का त्याग करने की है। भारतीय जाट समाज के 10 प्रमुख गुण जो जाट समाज को महान बनाते है वह निम्न प्रकार से है :–

1- **lp dgus dk lkgl**% जाट समाज की सबसे प्रमुख विशेषता सच कहने की है। जाट किसी के भी सामने सच्ची व स्पष्ट बात कहने का साहस रखते है तथा बिना किसी सकोंच या डर के साफ, सच्ची व स्पष्ट बात कहते है। चाहे उसकी प्रतिक्रिया स्वरूप उन्हें नुक्सान उठाना पड़े। सच्ची बात कहने के कारण ही जाटों को समाज में सच का समर्थक माना जाता है।

2- **LokfHkekuh gkuk**% जाटों का दूसरा प्रमुख गुण इनमें स्वाभिमानी की प्रबल भावना का होना है। अपने इस गुण के कारण जाट किसी भी प्रकार के अत्याचार तथा अपमान को सहन नहीं करते है तथा स्वाभिमानी होने के कारण ही सदैव चापलुसी करने से परहेज करते है तथा अपने तथा देश के मान सम्मान के लिए हर प्रकार का बलिदान देने के लिए सदैव आगे रहते है।

3- **ns'kHkfDr dh Hkkouk**% अपनी मातृभूमि तथा राष्ट्र की रक्षा के लिए देशभक्ति की भावना जाट समाज में कुट–कुट कर भरी हुई है। इसलिए जाटों की भागीदारी भारतीय सेना में सर्वाधिक है तथा गौरवपूर्ण है। युद्ध में जाट रेजिमैन्ट की बहादुरी का कायल पाकिस्तान भी रहा है। इस प्रकार जाटों में देशभक्ति की भावना इस समाज को बहुत महान बनाती है।

4- **egurh gkuk**% जाट समाज की एक ओर प्रमुख विशेषता जाट जाति के पुरूषों और महिलाओं का समान रूप से मेहनती होना है। जाट समाज के महिला तथा पुरूष अत्यधिक मेहनत करते हैं तथा अपनी मेहनत के कारण ही जाट कृषि, नौकरी तथा देश की सेना में महत्वपूर्ण स्थान रखते है। जाट समाज की महिलायें पुरूषों से भी अधिक मेहनत करती है तथा कृषि तथा पशु पालन के कार्यों में जाट महिलाओं का समस्त भारत में कोई मुकाबला नहीं है तथा इन्हें महिला जगत में आदरणीय स्थान प्राप्त है। इस प्रकार मेहनत का गुण भी जाट समाज को महान बनाता है।

5- **deZ'khy gkuk**% जाट समाज की एक ओर विशेषता इस समाज के लोगों का कर्मशील होना है। इस विशेषता के कारण ही जाट कर्म करने में विश्वास करते है तथा किसी भी प्रकार के अन्ध विश्वास तथा पाखण्डों से दूर रहते है। कर्म में विश्वास रखने के कारण ही जाट कृषि, खेलकुद तथा युद्ध कार्यों में सदैव आगे रहते है तथा मेहनत के दम पर ही सफलता प्राप्त करने मे विश्वास रखते है। इस प्रकार जाटों का कर्मशील होना जाट समाज को महान बनाता है।

6- **iapk;rh O;oLFkk dk leFkZd**% जाट की एक और विशेषता जाट समाज का पंचायती तथा लोकतान्त्रिक व्यवस्था का समर्थक होना है। जाट समाज शुरू से ही प्रजातन्त्र तथा पंचायती व्यवस्था में विश्वास रखता आया है। इस प्रकार जाट समाज पंचायतों के निर्णयों का आदर करता आया है। इसी कारण जाट समाज में खाप संगठन तथा खाप पंचायतें सभी प्रकार के विवादों को सामूहिक निर्णय द्वारा सुलझाती आयी है। इसी प्रकार जाट समाज लोकतान्त्रिक व्यवस्था का समर्थक तथा तानाशाही व्यवस्था का विरोधी रहा है। इसी प्रकार जाटों की पंचायती व्यवस्था जाट सामज को महान बनाती है।

7- **lkeçnkf;drk dk fojks/kh**% जाट सामज की एक ओर विशेषता जाटों की धर्म निरपेक्ष नीति पर चलने की भी है। जाट समाज हिन्दु, सिख, मुस्लिम तथा इसाई धर्म का समान रूप से सम्मान करता है तथा धर्म के प्रति कट्टरता जाटों में बिल्कुल नहीं है। इसी कारण जाट हर प्रकार की साम्प्रादायिकता की भावना के विरोधी है। जाट धर्म के स्थान पर जातीय भावना से अधिक ओतप्रोत रहते है। जाटों में साम्प्रादायिकता की भावना का न होना इस समाज को महान बनाने में विशेष सहयोगी है।

8- **cqtqxksZ dk eku&lEeku nsuk**% जाट समाज की सबसे बड़ी विशेषता बुजुर्गो को मान–सम्मान देने की है इस समाज में घर का चौधरी (मुखिया) अन्तिम समय तक घर के सबसे बुजुर्ग व्यक्ति को माना जाता है तथा घर के महत्वपूर्ण निर्णयों में उसकी सलाह लेकर ही फैसला किया जाता है तथा सभी सामाजिक उत्सवों में घर के बुजुर्ग को ही प्रधानता दी जाती है इस प्रकार जाट समाज में बुजुर्गों का आदरणीय व सम्मानित स्थान प्राप्त है। जोकि समाज को महान बनाती है।

9- **uSfrd vkpj.k dh etcwrh**% जाट समाज के लोग सदैव से ही नैतिक आचारण की व्यवस्था को जीवन में अपनाते आये है। इसी कारण से जाट समाज समगोत्र व समगांव में होने वाले विवाह का सर्दव विरोधी रहा है। नैतिक आचारण की मजबूती के लिए ही आर्य समाज को जाटों ने सर्वाधिक अपनाया है। जिसके कारण समाज नैतिक आचरण के मामले में बहुत मजबूत है। जाटों में नैतिकता की मजबूती होने के कारण ही जाट समाज महान बन पाया है।

10- **'kq) rFkk lknk [kkuiku**% जाट समाज की एक ओर प्रमुख विशेषता जाट समाज के लोगों का शुद्ध व सादा खानपान है। अधिकांश जाट परिवारों में मांस मछली के स्थान पर दुध, दहीं, तथा घी के खाने को अधिक महत्व दिया जाता है। जिसके कारण जाट शारीरिक रूप से मजबूत तथा मेहनती होते है। शुद्ध खान–पान

औरत वफा और त्याग की मूर्ति है, जो अपनी मेजबानी से, अपने को विल्कुल मिटा कर पति की आत्मा में एक अंगबन जाती है। – प्रेमचन्द

तथा दिखावे का प्रदर्शन ना करके जाट समाज के लोग साधारण तथा वास्तविक जीवन प्रणाली को महत्व देते है। जिसके कारण जाट सीधे, सरल तथा स्पष्टवादी होते है। जिससे जाट समाज महान कहलाता है।

इस प्रकार जाटों में पाये जाने वाले उपरोक्त 10 प्रमुख गुणों के कारण ही जाट समाज मेहनती, पराक्रमी चरित्रवान तथा महान कहलाता है परन्तु आधुनिक प्रतिस्पर्धी युग में जाटों की जीवन प्रणाली में कुछ अवगुण भी प्रवेश कर गये है जोकि जाट समाज के विकास में रूकवटें खड़ी कर रहे हैं तथा जाटों को प्रभावित करने वाले प्रमुख अवगुण (कमियां) ये हैं :–

1- u'k dk lsou % वर्तमान समय में जाटों में पाया जाने वाला प्रमुख अवगुण शराब आदि नशे के सेवन का है। जिसके कारण जाट जहां शराब पीने पर पैसे की बर्बादी करके आर्थिक स्तर पर कमजोर हो रहे है। वही नशे के कारण अपने व्यवसाय, कृषि, घर परिवार तथा बच्चों की शिक्षा पर पूर्ण ध्यान नहीं दे पाते है नशे का सेवन करने से जहां अनावश्यक लड़ाई झगड़ा बढ़ता है वही परिवार का शान्त वातावरण भी प्रभावित होता है तथा इसका बच्चों के विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। इस प्रकार नशे की प्रवृति जाट समाज को काफी नुक्सान पहुंचा रही है।

2- ckypky esa e/kqj Hkk"kk dh deh % जाट समाज के लोगों में एक ओर प्रमुख कमी बोलचाल की भाषा में मधुरता की कमी तथा कठोरता की अधिकता है जिसके कारण जाटों का काफी नुक्सान उठाना पड़ता है। अन्य कई जातियों ने जहां भाषा में मधुरता तथा आदर का भाव सम्मिलत करके लोगों में विश्वास कायम करके अभूतपूर्व विकास किया है। वही जाटों ने कठोर भाषा अपना कर बहुत सी जातियों को अपने विरूद्ध कर लिया है। भाषा में कठोरता के कारण बहुत से लोगों को जाट अनपढ़ तथा झगडालू लगते है जिसके कारण लोगों में जाटों की विश्वसनीयता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है तथा इसके कारण जाट समाज विकास के मामले में पिछड़ जाता है।

3- vgdkj o Øks/k ij fu;U=.k dh deh % जाट समाज का एक ओर प्रमुख अवगुण जाटों में अंहकार व क्रोध पर नियन्त्रण ना रख पाने का है। अंहकार व क्रोध किसी भी व्यक्ति की सोचने समझने की क्षमता को नष्ट कर देते है। जाटों में वर्तमान समय में आर्थिक विकास के कारण अंहकार की भावना भी घर कर गई है। जिसे जाट स्वाभिमान की भावना का नाम देते है परन्तु वास्तव में स्वाभिमान व अंहकार में बहुत बड़ा अन्तर है। स्वाभिमान गुण तथा अंहकार अवगुण है इसी तरह जाट अपनी आलोचना सुनकर अपने क्रोध पर नियन्त्रण नही रख पाते जिसका खामियाजा उन्हें प्रत्येक क्षेत्र में भुगतना पड़ता है। इस प्रकार अंहकार व क्रोध की भावना पर नियंन्त्रण ना होने के कारण जाट समाज के विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है।

4- vU; tkfr;ksa ds lkFk leUo; dh deh % जाट समाज की ओर बड़ी कमी जाटों का अन्य जातियों के साथ तालमेल ना बिठा पाने का है। जिसके कारण जाटों को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अन्य जातियों के विरोध का सामना करना पड़ता है। जिससे जाट समाज के विकास पर विपरित प्रभाव पड़ता है तथा जाट समाज विकास के दृष्टिकोण से पिछड़ता जा रहा है।

5- O;olkf;d nf'Vdk.k dh deh % जाट समाज के विकास ना कर पाने का मुख्य कारण जाटों में व्यवसायिक बुद्धिमता की कमी है जाटों में मेहनत करने की कोई कमी नहीं है परन्तु वह अपने व्यवसाय को व्यापारिक रूप प्रदान नहीं कर पाते है। जिसके कारण उन्हें अपने व्यवसाय का पूर्ण आर्थिक लाभ प्राप्त नहीं हो पाता है तथा आर्थिक लाभ प्राप्त होने के कारण जाट समाज के लोग अन्य वर्गों की तुलना में पिछड़ते जा रहे हैं।

इस प्रकार जाट समाज में बहुत से गुण है जो इस समाज को आदर्श व महान बनाते है परन्तु जाट समाज में कुछ अवगुण ऐसे भी है जिन पर जाट समाज के लोग पूरी तरह नियन्त्रण नहीं कर पाते है तथा इन अवगुणों के कारण जाट समाज में सबसे बड़ी समस्या गुणों के सही प्रबन्धन की है। जाट समाज को यदि एक आदर्श विकासशील तथा महान समाज की स्थापना करनी है तो उसे अपने गुणों का समयनुसार सही प्रबन्धन करना होगा तथा समाज के लोगों में पाये जाने वाले अवगुणों को शीघ्र दूर करना होगा अन्यथा जाट समाज में इतने गुणों व विशेषताओं के पश्चात भी जाट विकास के मामले में पिछड़ते जायेगें। जाटों में मेहनत, ईमानदारी व समपर्ण जैसे गुणों की कोई कमी नहीं है आवश्यकता केवल उचित समय पर सही गुण के इस्तमाल करने की है। वर्तमान समय में जाट समाज की युवा पीढ़ी अपनी क्षमताओं को पहचान कर व विशेषताओं का सही प्रबन्धन करके अपने परिवार, जाट समाज तथा भारत देश के विकास के लिए सार्थक प्रयास कर रही है तथा उस में सफलता भी प्राप्त कर रही है। जिस पर समस्त जाट समाज गर्व कर सकता है।

सुखी रहने के उपाय

शांत रहो, मनन करो
हँसते रहो, हँसाते रहो
कम खाओ, गम खाओ
चिंता नही, चितन करो
किसी की बुराई मत करो
सुबह एक घण्टा मौन रखो
क्षमा मांग लो, क्षमा कर दो
न्यूनतम आवश्यकताएं रखो
सबको क्रियात्मक सहयोग दो
हमेशा सकारात्मक सोच रखो
सबके प्रति हित का भाव रखो
कमाई का कुछ हिस्सा दान करो
परिस्थितियों से तालमेल बिठाओ
अधिकार भूलो, कर्त्तव्य याद रखो
सेवा करो, बदले में कुछ मत चाहो
सुबह एक घण्टा खुली हवा मे घूमो
धैर्य, संयम एवे सहनशीलता अपनाओ
कम, धीरे व प्रेम से बोलो, ज्यादा सुनो
सुबह जल्दी उठो, रात को जल्दी सोओ
किसी के प्रति ईर्ष्या व द्वेष की भावना मत रखो
किसी पर गुस्सा मत करो, अपने ऊपर भी नहीं
किसी को दुःख मत दो, किसी का अपमान मत करो
प्रतिदिन सत्य ज्ञान सुनकर, राजयोग का अभ्यास करो

आज के कष्टों का सामना करने वालों के पास कल के कष्ट आते हुए झिझकते है। – अज्ञात

वैवाहिक विज्ञापन

- SM4 Jat Boy 26/5'8" B.Tech, Software Engeener in USA (40-50 Lacs) Avoid Gotras: Dalal, Dagar, Sangwan Cont.: 981114702, 011-25164027
- SM4 Jat Boy 28/5'9", LLB, LLM, Gazetted officer in Prosecutor Court Rohini, Avoid Gotra: Dahiya, Mahla, Nain, Cont.: 9891114702, 9990236643
- SM4 Jat Girl 28/5'5", BA, B.Com, JBT, Primary Teacher in Pvt. School, Avoid Gotra: Malik, Rana, Chikara, Cont.: 9873816062
- SM4 Jat Boy 29/6',B.Tech, Software Engeener in MNC (7.5 Lacs) Avoid Gotra: Malik, Ahlawat, Bankhar, Cont.: 9996091306
- SM4 Jat Boy 27/6', MBA, Assistant Manager in MNC Gurgaon (6Lacs) Avoid Gotra: Bahlara, Jatrana, Ahlawat, Cont.: 9992348948
- SM4 Jat Boy 27/5'9", B.Tech., Software Engeener in MNC (6.5 Lacs) Avoid Gotra: Dahiya,Huda, Ahlawat, Cont.: 9466568990
- SM4 Jat Boy 30/5'11", B.Tech. (Computer Science), MBA, Marketing Officer in Delhi, Avoid Gotra: Sindhu, Sangwan, Malik, Cont.: 9416044450
- SM4 Jat Boy 26/5'11", BA, JBT, LDC in MCD Delhi, Avoid Gotra: Rana, Dahiya, Rathi, Jun, Cont.: 9871277227
- SM4 Jat Boy 26/5'8.5", IT Manager, Avoid Gotra: Rana, Panu, Cont.: 9868131301
- SM4 Jat Boy 27/5'10", Army Lieutenant, Avoid Gotra: Nain, Dahiya, Dagar, Cont.: 9891874288, 011-65797955
- SM4 Jat Boy 31/5'7", MBA, Assistance Corporate office (7Lacs PA), Agriculture Land 14 Acars, Avoid Gotra: Sangwan, Sheoran, Lamba, Cont.: 9868565007
- SM4 Jat Boy 31/5'10", Govt. Officer, Avoid Gotra: Chilar, Balhara, Cont.: 9650385046
- SM4 Jat Boy 24/5'11", MCA, working in MNC Gurgaon Avoid Gotra: Dahiya, Nain, Rathi, Cont.: 9871639007
- SM4 Jat Boy 32/6'2", B.Tech., Engineer in MNC Noida (14 Lacs PA) Avoid Gotra: Punia, Ahlawat, Salvan, Cont.: 9910320984, 9711672006
- SM4 Jat Boy 30/6'10", M.Sc., MBA, Ph.d, TS Officer in Australia (60 Thousand Dollar), Avoid Gotra: Sukhala, Rathi, Jun, Dalal, Cont.: 8685864436
- SM4 Jat Boy 30/5'9", B.Sc., MBA, Assistance Administrative officer in LIC UP, Avoid Gotra: Dabas, Dagar, Cont.: 882672083
- SM4 Jat Boy 29/5'11", B.Sc, M.Sc., Software Engeener in MNC Gurgaon (5Lacs PA), Avoid Gotra: Thakran, Jangu, Dhankhad, Cont.: 9891068053
- SM4 Jat Boy 27/5'8", B.Tech, M.Sc., London, Service in UK, Software Engeener, Avoid Gotra: Khatri, Kadyan, Dahiya, Cont.: 9650522700
- SM4 Jat Boy 27/5'8", M.Sc. Physics,Chemistry, Bank PO, Vijaya Bank, Avoid Gotra:Dahiya, Suhag, Chillar, Cont.: 9416311563
- SM4 Jat Boy 24/5'1.5", M.Tech., Energy study & Environ pollution Murthal, Avoid Gotra:Dahiya, Suhag, Chillar, Cont.: 9416311563
- SM4 Jat Boy 29/5'11", B.Sc., MP.Ed, Net Passing, Permanent PTI Teacher in Delhi, Avoid Gotra:Pawar, Rana, Dagar, Cont.: 9899559575
- SM4 Jat Boy 26/5'8", B.Tech., MBA, working in MNC Gurgoan (6 Lacs PA), Avoid Gotra: Kulu, Sangwan, Maan, Cont.: 9466568990
- SM4 Jat Boy 32/5'10", M.Sc., M.Phil, Phd (Microbiology) LS Net Passing, working in Jaipur University, Avoid Gotra: Dahiya, Ahlawat, Huda, Cont.: 9466568990
- SM4 Jat Boy 31/5'7", B.Com., MBA, Asst. Manager INC (7.5 Lacs LPA), Avoid Gotra: Sangwan, Lamba, Sheoran, Cont.: 9868565007
- SM4 Jat Boy 30/5'11" B.Tech. MBA wkg Infosys Chandigarh 10.21 lpa. Avoid Gotra: Khatri, Gahlot, Dahiya. Delhi, Cont.: 9891261244
- SM4 Jat Boy 29/5'11" B. Tech ofcr RBI (14 LPA). Mother teacher. Father PSU Retd. Ofcr. Avoid Gotra: Rana, Dahiya, Cont.: 9009259791
- SM4 Jat Boy 26/5'9" B. Tech wrkg MNC Noida Pkg 6.5 Lpa father Govt. Officer. Avoid Gotra: Rana, Dhaka, Cont.: 9837324743
- SM4 Jat Boy 29/'5'8" MBA working in MNC Ggn. Astt. Mghr. 61-pa seeks NCR wkg/high Edu Girl. Avoid Gotra: Dahiya, Dagar, Narwal, Cont.: 9992558736
- SM4 Jat Boy 29/7'4", 7.4 lam, wkg MNC Gurgaon 9Lpa. Delhi based fmly. Avoid Gotra: Dhankhar, Kundu, Kadian and U.P. Cont.: 9729953437
- SM4 Jat Boy 31/5'7", B.Com, MBA, Asstt. Manager, INC, 7.5 LPA, Avoid Gotra: Sangwan, Lamba, Sheoran, Cont.: 9868565007
- SM4 Jat Girl 31/5'5" MCA, MBA, NET, Ph.d. Employed as Director in Engineering College, Palwal. Avoid Gotras: Saharan, Hooda, Malik Cont.:09813730434, 01257-277179
- SM4 Jat Girl 24/5' MA (History), BEd. Pursuing P Phil from Punjab University Chandigarh. Father Haryana Govt. Employee at Panchkula. Avoid Gotras: Rangi, Kuhar, Rana, Solanki, Tomar, Gehlan Cont.:09467507715
- SM4 Jat Girl 26/5'1" BA, LLB (P.U), LLM (K.U) Employed as Clerk in Haryana Civil Secretariat. Family settled in Panchkula. Father Retd. Class-I officer, Preference Tri city and govt. Job. Avoid Gotras: Dahiya, Rathi, Kadyan, Nandal, Cont.:09464954161
- SM4 Jat Girl 26/5'4" M Pharma Working in I.T. Park Preference professional degree holder. Avoid Gotras: Dhull, Rathi, Lohan Cont.:09416225959
- SM4 Jat Girl 25.6/5'4" Diploma & B. Tech. PGDCA Preference Army Officer and Govt. Job Father Captain Retd. Brother in Army Avoid Gotras: Kharta, Dhillon, Bura Cont.:09416460416, 09419733198
- SM4 Jat Girl 27/5'5" MA Sociology, P. U. Chandigarh MBA (HR), PTU Jalandhar (Punjab) Father retired Superintendent, HSS from Haryana Civil Secretariat Avoid Gotras: Pahal, Khatri, Dahiya Cont.:09876662178, 0172-2555098
- SM4 Jat Girl 25.6/5'3" PGT (Chemistry Lecturer) HES-II Preferred class I or II officer resident of Panchkula, Chandigarh & Mohali. Avoid Gotras: Nandal, Hooda, Lakra Cont.:09915805679
- SM4 Jat Girl 28/5'3" Double MA & B.Ed. J.B.T Employed as JBT Teacher in Haryana Government since 2011. Avoid Gotras: Dhull, Goyat, Bhal Cont.:09467671451
- SM4 Jat Girl 23/5'2" B.Tech (CSE)Avoid Gotra: Malik, Hooda, Joon Cont.:09780336094
- SM4 Jat Boy 26/6' M. Tech. I.T. Working in MNC I.T. Park Chandigarh. Own plot at Panchkula and Kothi at Sonepat as residence. Avoid Gotras: Kuhar, Khatri, Malik, Cont.:09467741187
- SM4 Jat Boy 32.6/5'8" MA. M. Phil, Net Qualified, ME.d. Employed as Lecturer in Govt. College, Meham. Avoid Gotras: Saharan, Hooda, Malik Cont.:09416437846, 09813730434
- SM4 Jat Boy 33/5'11" M.A, M.Sc., H.D.S.E., Employed as Software Manager in ICICI Bank Insurance Sector Delhi With 7 Lac Annual & Bonus, Health Insurance benefits. Avoid Gotras: Tomar, Khewal, Cont.:09729440347
- SM4 Jat Boy 24/5'9" Employed as Constable in Chandigarh Police Avoid Gotras: Dahiya, Malik, Pawaria Cont.:09417567383

gfj;k.koh thou'kyh d fprj Fk n;kpn ek;uk

& Mk jkt Un cMx tj

हरियाणा में लोक साहित्य की एक बड़ी परम्परा रही है। महिलाओं द्वारा गाए जाने वाले लोकगीत तो हैं ही, उसके साथ लखमीचंद, मांगेराम, बाजे भगत, धनपत निंदाणा, महाशय छज्जू लाल सिलाणा, नेकीराम लोकगायकी के रूप में हरियाणा में खासे प्रसिद्ध हैं। इसी परम्परा में महाशय दयाचंद मायना एक बहुत अति विशिष्ट नाम हैं। दयानंद का जन्म रोहतक के मायना गांव में 10 मार्च, 1915 को नन्हूराम तथा जुमिया देवी के घर हुआ। नाममात्र शिक्षा ग्रहण कर वे लोक साहित्य सृजन में लग गए। सन 1941 से 1947 तक फौज में भी रहे। उनकी अनेक राणनियों में फौजी जीवन का चित्रण है। सांकोल निवासी मुंशी राम इनके गुरू थे। इन्होंने 21 किस्सों और 150 से अधिक रागणियों की रचना की। महाशय दयाचंद अपने वक्त में दिल्ली, मुंबई, हावड़ा, हैदराबाद हरियाणा में लोकप्रिय थे।

महाशय दयाचंद ने कला के माध्यम से सामाजिक आयामों को छूकर लोक में आदर्शों की स्थापना की है। पूर्णिमा–प्रकाश, नीलम–पुखरा, मायवती–मास्टर, कवि कालिदास, नेताजी सुभाषचंद्र बोस, ब्रिगेडियर होशियार सिंह, वीर हकीकत राय आदि किस्सों में कवि ने जाति–पाति शिक्षा, सामाजिक संबंधों, देशप्रेम, साम्प्रदायिक सद्भाव, स्त्री–शिक्षा आदि उद्देश्य को सर्वग्राह्य बनाया है। पौराणिक कथाओं को भी नवीन संदर्भों में व्याख्याइत कर समाज को जगाने का प्रयास किया। किस्सों तथा रागणियों के माध्यम से वे गरीब, अस्पृश्य पीड़ित को उसके अधिकार दिलाने की चेतना से भरपूर दिखाई देते हैं।

लोक साहित्य को पारम्परिक पौराणिक दायरे से बाहर निकालकर दयाचंद ने युगीन समस्याओं को लोक के सामने कलात्मक तरीके से प्रस्तुत किया है। पूर्णिमा–प्रकाश किस्से में डीएसपी का लड़का प्रकाश दहेज का प्रलोभन देने वालों को ठुकराकर एक तथा कथित अस्पृश्य लड़की से शादी करने का प्रस्ताव पिता के समक्ष रखता है। इस किस्से की रागणी 'पहले आली बात पुरानी ख्याल बदलने होंगे, ऊंच–नीच के शब्द पिताजी फिलहाल बदलने होंगे' में युगबोध देखा जा सकता है– मजदूरां की ध्याड़ी खा–खा, मोटे–मोटे सेठ होंगे/खून गरीबां का पी–पी कै, मोटे–मोटे पेट होंगे/घर–घर में म्हां चौधरी सारे, अफसर और मेट होंगे/धन–माया के लोभी लाला, दया–धर्म तै लेट होंगे/ धनवानां की जगह ईब कंगाल होंगे।' किस्से में प्रकाश पूर्णिमा को समझाता है कि हमारी सब समस्याओं की जड़ ऊंच–नीच, जाति–पाति ही है: यो भारत गारत कर डाला, ऊंच–नीच के धंधे नै/बाकायदा हक मिलणा चाहिए पशु और पारिंदे नै/हो..... ईब हर बंदे नै आजादी होणी चाहिए।

नाममात्र शिक्षा प्राप्त महाशय दयाचंद जी ने सबसे अधिक प्रचार शिक्षा का किया व कई किस्से तो शिक्षा को उद्देश्य बनाकर लिखे। 'ek;korh ekLVj' तथा 'कवि कालिदास' शिक्षा की महत्ता के किस्से है। धनी बाप की बेटी होने के बावजूद मायावती अनपढ़ता के कारण उसकी जोड़ी का वर नहीं मिलता। मायावती की टीस देखी जा सकती है: अनपढ़ माणस नै दुनिया मैं, सब बेकार कहैं सै/अगड़ पड़ोसी, यारे, प्यारे, रिश्तेदार कहैं सै/मनैं अनपढ़, मूढ़ गंवार कहै सैं, न्यू सरमाऊं मै।

कवि भारत की आर्थिक विषमता का सूक्ष्म–द्रष्टा है। 'नीलम पुखराज' किस्सा इस विषमता का जीता–जागता प्रमाण है।

महाशय दयाचंद की रागणियां मजदूर, गरीब, अस्पृश्य, निकृष्ट जीवन जीने को विवश व्यक्ति की जिजीविषा की रागणियां हैं। कवि अर्थव्यवस्था की बारीकियों का भी जानकार प्रतीत होता है। उसे लगता है कि धनिक वर्ग गरीबों की माली हालत का जिम्मेवार है। गरीब तो बस सारी उम्र पिसता ही है: मेहनत मजदूरी का तोड़ा, कुछ तुम अटका द्यो सो रोड़ा/गरीबों का जाथर थोडा, कुछ महंगाई का बोझ/ए धन आले लोगों, थारै नहीं दया का खोज।

एक फुटकल रागणी में उन्होंने चोर–जार, नशेड़ी और जुआरी की प्रवृत्ति और उनका समाज पर पड़ने वाले नाशक प्रभाव का चित्रण किया है: चार जणां की लिखूं कहाणी एक कागज के गत्ते पै/चोर जार नशेबाज, जुआरी खड़े पाप के हत्थे पै/रागणी की चारों कलियों में वे एक–एक को लेकर पर्दाफाश करते हैं। कवि चूंकि फौजी भी रह चुके हैं, इसलिए सन् 1965 और 1971 की लड़ाइयों में उन्होंने अनेक रागनियां लिखीं। महाशय दयाचंद एक बेहतरीन देशप्रेमी लोक गायक के रूप में उभरकर सामने आते हैं। नेताजी सुभाषचंद्र बोस, वीर हकीकत राय तथा ब्रिगेडियर होशियार सिंह उनके ऐसे ही किस्से हैं। ब्रिगेडियर होशियार सिंह के किस्से की एक कली दर्शनीय है– शेरां की छाती तण्या करै/जब गीदड़ का दिल छण्या करै/ बार–बार ना जण्या करै सुत जणने आली मात।

कवि अंध–विश्वास व पाखंडों से भोली–भाली जनता को निकालना चाहते हैं। उनके सरवर–नीर किस्से से एक रागणी ऐसा ही बयां करती है: मनैं भगत बोहत से देखे सैं जो काढ़े भूत बजाकै डोरू/एक आधे की कहता कोन्या, बोहत फिरै सैं इज्जत चोरू/साची सैं हीणें की जोरू, सबकी भाभी हो सै।

कली की अंतिम पंक्ति में कवि ने सामाजिक–आर्थिक विषमता में स्त्री की दुर्दशा का मार्मिक अंकन किया है। उनकी रागणियां सामंजस्य प्रस्तुत करती है। उनकी श्रृगारिकता में अश्लीलता नहीं है। उनकी रागणी– पाणी आली पाणी प्यादे, क्यूं ठाकै डोल खड़ी होगी/के कुएं का नीर सपड़ग्या, क्यूं अनबोल खड़ी होगी 'विश्व प्रसिद्ध हो चुकी है। महाशय दयाचंद ने प्रचलित उर्दू तथा अंग्रेजी भाषाओं के शब्दों का बेहतरीन प्रयोग किया है। वे हरियाणवी लोक साहित्य के एक स्तम्भ के रूप में जाने जाएंगे। हरियाणवी जीवन–शैली के चितेरे इस लोक कवि का 20 जनवरी, 1993 में देहांत हो गया।

कानों के दुरूपयोग से मन बहुत अशान्त और कुलषित हो जाता है। – महात्मा गांधी

अहिंसा

– नरेन्द्र आहूजा'विवेक'

अहिंसा किसे कहते हैं कोई भी व्यक्ति अहिंसक कैसे बन सकता है। अहिंसा के क्या लाभ हैं। कहीं अहिंसा कायरता का पर्याय तो नहीं आदि अनेकों प्रश्न मनुष्य के मन मस्तिष्क में उठते हैं। अहिंसा का व्रतजीवन में धारण करने से पूर्व इन संशयों का निवारण अत्यंत आवश्यक है।

अहिंसा की व्यापक परिभाषा महर्षि देव दयानन्द द्वारा दी गई है "मनसा वाचा कर्मणा कभी किसी को दुःख ना पहुचाना। क्रोध को क्षमा से, विरोध्स को अनुरोध से, घृणा को दया से, द्वेष-प्रेम से जीतना ही अंहिसा कहलाता है।" इसके विपरीत किसी भी प्रकार से किसी को कष्ट पहुंचाना हिंसा कहलाता है। ऋग्वेद में भी मनुष्य को हिंसा ना करने का आदेश दिया है मा स्रेघत।। 7/62/9 अर्थात हिंसा मत करो। देव दयानन्द द्वारा दी गई अहिंसा की परिभाषा और वेदमें हिंसा मत करो के आदेश के उपरांत प्रश्न उठता है कि आखिर किस प्रकार मनुष्य अहिंसा का व्रत ले औरमनुष्य के जीवन में अहिंसा का आधार क्या है। परमपिता परमेश्वर की न्याय व्यवस्था पर पूर्ण आस्था विश्वास और दृढ़ निश्चय रखने वाला व्यक्ति ही अहिंसा का व्रत ले सकता है। यदि हमें सर्वव्यापी दृष्टा सर्वशक्तिमान न्यायकारी प्रभु पर पूरा विश्वास है तो निश्चिय रूप से हम कभी किसी के प्रति हिंसा का भाव मन में लाकर ईश्वरीय न्याय एवं दंड व्यवस्था को अपने हाथ में लेने का अपराध नहीं करेंगे। यदि हम किसी भी प्रकार से किसी अन्य को कष्ट पहंचा कर उसके प्रति स्वयं हिंसा करते हैं तो इसका सीधा अर्थ है कि हमें ईश्वरीय न्याय व्यवस्था पर संशय है और हम कानून व्यवस्था को हाथ में लेकर अपराधी की भांति ही अपराध कर रहे हैं तो निश्चिय रूप से हम भी ईश्वरीय न्याय व्यवस्था में दंड के भागी बनेंगे। ऋग्वेद का मंत्र स्पष्ट करता है कि केवल सच्चा पूर्ण आस्तिक ही अहिंसक हो सकता है

उदगादय मादित्यो विश्वेन सहसा सह।
द्विषन्तं मह्यं रूधयन् मो अहं द्विषते रधम।।

अर्थात यह आदित्य परम आत्म सूर्य मेरे लिए दुष्ट अत्याचारी शत्रु को नाश करता हुआ, वशवर्ती करता हुआ अपने सम्पूर्ण तेज वा बल के साथ उदित हुआ है इसलिए मैं शत्रु की हिंसा ना करूं और शत्रु के वशवर्ती ना हो जाऊं।

इस वेद मंत्र और देव दयानन्द द्वारा दी गई अहिंसा की परिभाषा से स्पष्ट हो जाता है कि केवल सच्चा पूर्ण आस्तिक ईश्वर एवं ईश्वरीय न्याय व्यवस्था में विश्वास आस्था रखने वाला व्यक्ति ही अहिंसक हो सकता है । वह कभी मनसा वाचा कर्मणा किसी को कष्ट नहीं पहुंचाता। दूसरों या शत्रुओं को कष्ट देने वाला व्यक्ति कानून को अपने हाथ में लेने का अपराधी होता है। अर्थात द्वेष को प्रेम से, क्रोध को क्षमा से जीतने वाला ही अहिंसक होता है। किसी शत्रु की हिंसा को प्रतिहिंसा से जीतने वाला व्यक्ति तो उसी की भांति ईश्वरीय न्याय व्यवस्था में अपराधी कानून को हाथ में लेने के कारण दंड का भागी बनता है।

इस प्रकार सिद्ध हुआ कि अंहिसा का आधार मनुष्य द्वारा ईश्वर की न्याय प्रणाली पर विश्वास एवं आस्था है। अब किसी भी मनुष्य की किसी भी वस्तु के प्रति आस्था विश्वास तभी होगा जब उसे उस वस्तु के यथार्थ सत्य का ज्ञान होगा। अर्थात हमारी ईश्वर के प्रति आस्था श्रद्धा एवं उनके न्याय पर विश्वास केवल तभी हो सकता है जब हमें ईश्वर के सत्य स्वरूप गुणों का यथार्थ ज्ञान होगा। ईश्वर सर्वव्यापी सर्वशक्तिमान आदि सृष्टि का निर्माण, पालन, संहार एवं न्यायकर्ता है ऐसा सत्य यथार्थ ज्ञान होने पर ही मनुष्य की ईश्वर के प्रति आस्था बढ़ती है। अहिंसा के पुजारी महात्माँ गांधी को अहिंसा में सत्य ईश्वर के दर्शन करने का सीधा और छोटा मार्ग दिखाई देता है और अहिंसा सत्य का प्राण है। लिनोबा भावे भी कहते है कि बिना सत्य अंहिसा की रक्षा नहीं हो सकती। इससे निष्कर्ष निकलता है कि परमपिता परमेश्वर के सच्चे स्वरूप के यथार्थ ज्ञान गुण कर्म स्वभाव को जाने बिना मनुष्य की उसके प्रति आस्था विश्वास श्रद्धा नहीं हो सकती और ईश्वर के प्रति आस्था के बिना मनुष्य अहिंसा का व्रत नहीं ले सकता।

अल्पज्ञ होने के कारण कई बार मनुष्य अहिंसा को कायरता का पर्यायवाची मानने लगता है। जबकि अहिंसक व्यक्ति अत्यंत सहनशील होने के कारण परमवीर होता है। जिस प्रकार कहते हैं कि बचाने वाला मारने वाले से अधिक बलवान होता है ठीक उसी प्रकार सहनशील व्यक्ति अत्याचारी से अधिक शक्तिशाली एवं समर्थ होता है। दुःख–सुख, यश–अपयश, हानि–लाभ आदि में अत्यन्त सहनशील व्यक्ति को स्थित प्रज्ञ भी कहते हैं।

इस प्रकार निष्कर्ष निकलता है कि ईश्वर के सच्चे गुण कर्म स्वभाव के सत्य ज्ञान से परिपूर्ण आस्थावान मनुष्य ही जीवन में अहिंसा का व्रत धारण कर सकता है और अहिंसक व्यक्ति अत्यंत सहनशील और परमवीर होता है।

हमें जिन पर गर्व है

श्री देवेन्द्र अहलावत सपुत्र श्री कृष्ण कुमार मकान न.० 270, सैक्टर-*25*, पंचकूला ने सी. बी.एस.सी, नई दिल्ली द्वारा आयोजित 10वीं की भवन विद्यालय स्कूल, सैक्टर-15, पंचकूला से 10 सीजीपीए प्राप्त किये।

इनकी शानदार सफलता पर जाट सभा चंडीगढ़ उज्जवल भविष्य की कामना करती है।

सम्पादक मंडल

संरक्षक : डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)
सम्पादक : श्री गुरनाम सिंह, आई.एफ.एस. (सेवानिवृत)
सह–सम्पादक : डा॰ राजवन्तीमान
साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक
प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो० : 9888004417
श्री जे.एस. ढिल्लो, मो० : 9416282798
वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़

जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, चण्डीगढ़
फोन : 0172–2654932 फैक्स : 0172–2641127
Email : jat_sabha@yahoo.com

मुद्रक प्रकाशन एवं सम्पादक गुरनाम सिंह ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोशियटिड प्रिन्टर्ज़, चंडीगढ़, फोन : 0172–2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2-बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27-ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया।